पाठ-8

मुगल साम्राज्य की स्थापना (1526 ई0-1556 ई0)

दिल्ली सल्तनत की शक्ति शनैः-शनैः क्षीण हो रही थी। फलस्वरूप देश की राजनैतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई थी। अनेक राज्यों का उदय हो गया था। इनमें कोई ऐसा राज्य नहीं था जो देश की रक्षा के लिए अन्य राज्यों को एकता के सूत्र में बाँध सकता और उनका नेतृत्व कर सकता। राजनैतिक एकता के अभाव में बाबर को भारत पर आक्रमण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

बाबर (1526 ई0-1530 ई0)

बाबर

बाबर के पिता तैमूर तथा माता चंगेज खाँ के वंश के थे। बाबर का पिता उमर शेख मिर्जा मध्य एशिया की छोटी सी रियासत फरगना का शासक था। यह एक उपजाऊ प्रदेश था। हरे-भरे चरागाह, उत्तम जलवायु एवं फलों के बागान यहाँ की मुख्य विशेषता थी। अपने पिता की मृत्यु के बाद बाबर फरगना का शासक बना। उस समय उसकी आयु ग्यारह वर्ष के लगभग थी। सिंहासन पर बैठते ही बाबर को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

वह अपने पूर्वज तैमूर के राज्य समरकन्द को भी जीतना चाहता था। उसने काबुल पर अपना अधिकार जमाया और वहाँ से वह भारत की ओर आकर्षित हुआ।

बाबर का भारत पर आक्रमण

इब्राहिम लोदी के विरोधी बाबर की सहायता से अपना स्वतन्त्र साम्राज्य स्थापित करने की योजना बनाने लगे। उधर बाबर स्वयं भारत पर अधिकार करना चाहता था। इसके लिए उसने अपनी सेना को भली-भाँति तैयार किया। उसने अपना तोपखाना भी सुसज्जित कराया। इसी समय पंजाब के गर्वनर दौलत खाँ लोदी ने उसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।

1526 ई0 में पानीपत के मैदान में बाबर का सामना इब्राहिम लोदी से हुआ। बाबर के पास तोपें थीं जो भारत के शासकों के पास नहीं थीं। उसके पास कुशल घुड़सवार भी थे। उसकी सेना छोटी थी परन्तु अच्छी तरह प्रशिक्षित थी। बाबर एवं उसकी सेना को अनेक युद्धों के अनुभव थे। उसने बड़ी कुशलता से अपनी सेना का संचालन किया, बाबर की विजय हुई। इब्राहिम लोदी लड़ाई में मारा गया। इसी के साथ लोदी वंश का अंत हो गया और भारत में एक नए वंश मुगलवंश की स्थापना हुई।

बाबर और राजपूत-चित्तौड़ के महाराणा संग्राम सिंह बाबर के सबसे शक्तिशाली शत्रु थे। ये राणा सांगा के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। बाबर ने स्वयं राणा सांगा के बारे में लिखा था कि "राणा सांगा ने अपनी वीरता के बल पर भारत में उच्च स्थान प्राप्त किया था।

खानवा का युद्ध-1527 ई0 को राणा सांगा और बाबर के मध्य खानवा का युद्ध हुआ। युद्ध में बाबर की विजय हुई। इस युद्ध के परिणामस्वरूप -

राजपूतों की शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रभाव समाप्त हो गया।

मुगल वंश की नींव सुदृढ़ हो गई।

राजपूतों का दिल्ली पर अधिकार करने का सपना अधूरा रह गया।

इसके बाद बाबर ने चन्देरी के शासक मेदिनीराय को चन्देरी के युद्ध (1528 ई0) में तथा अफगान सरदारों को घाघरा (1529 ई0) के युद्ध में पराजित कर भारत में मुगल

साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया।

बाबर का चरित्र

बाबर को कलम और तलवार दोनों का सिपाही कहा जाता है। सैनिक कार्यों के साथ-साथ वह साहित्य के प्रति रुचि रखता था। उसे तुर्की एवं फारसी भाषा तथा साहित्य का अच्छा ज्ञान था।

बाबर स्वयं भी उच्च कोटि का साहित्यकार था। उसने अपनी आत्मकथा लिखी। यह तुर्की भाषा में है और तुजुक-ए-बाबरी नाम से प्रसिद्ध है। इसके फारसी अनुवाद को 'बाबरनामा' कहते हैं, जिसे अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया था।

बाबर को बगीचों का बहुत शौक था। उसने आगरा तथा लाहौर के आस-पास कुछ बगीचे लगवाए।

26 दिसंबर 1530 को बाबर की मृत्यु हो गई।

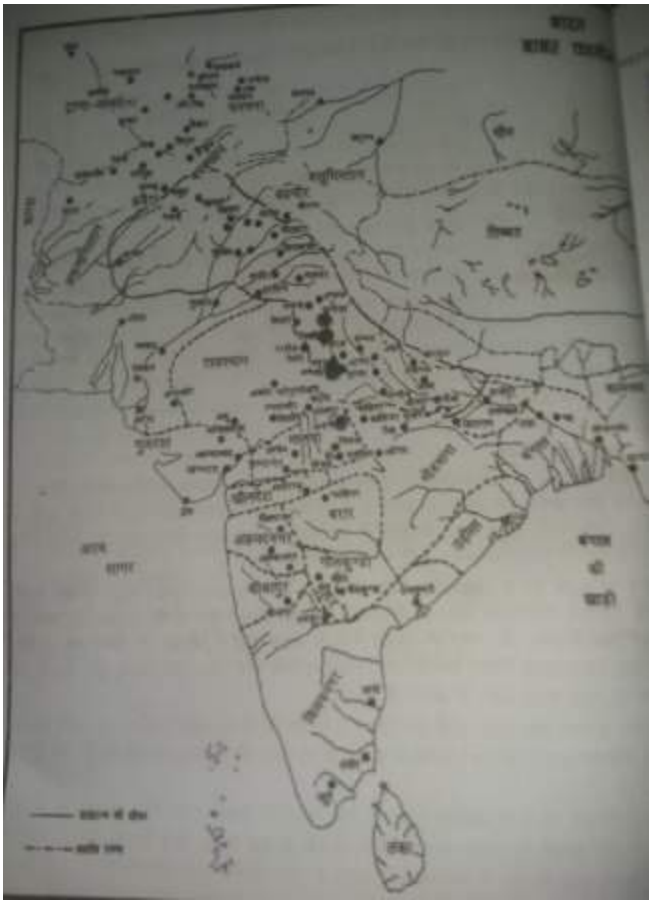

हुमायूँ (1530-1540 ई0 तथा 1555-1556ई0)

बाबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हुमायूँ 1530 ई0 में मुगल सिंहासन पर बैठा। सिंहासन पर बैठते ही हुमायूँ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसकी सबसे बड़ी कठिनाई उसके शत्रु थे जिनमें पश्चिम में गुजरात के शासक बहादुरशाह और पूर्वी भारत का शेरशाह मुख्य थे। ये दोनों भारत में अपनी शक्ति को बढ़ा रहे थे और मुगल शासक हुमायूँ को भारत से भगाने के लिए प्रयत्नशील थे। इन्हीं के साथ हुमायूँ के सगे सम्बन्धी भी उसके लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे थे। उन्होंने प्रायः उसके शत्रुओं का ही साथ दिया।

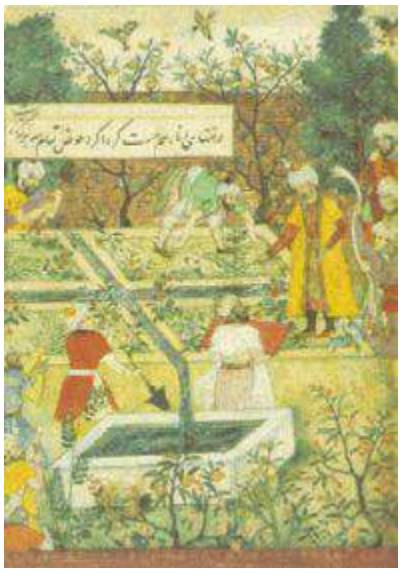

बाबर बगीचे में, बाबरनामा

बाबर का

चाँदी का दिरहम

हुमायूँ (1530-1540 ई0 तथा 1555-1556ई0)

हुमायूँ और बहादुरशाह

बहादुरशाह गुजरात का शासक था। बहादुरशाह दिल्ली का साम्राज्य प्राप्त करना चाहता था। उसने सन् 1535 ई0 में चित्तौड़ पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया। अतः हुमायूँ एवं बहादुरशाह के बीच युद्ध की सम्भावना बढ़ने लगी। हुमायूँ से बचते हुए बहादुरशाह ने पुर्तगाली द्वीप दिउ में शरण ली। हुमायूँ गुजरात विजय कर अपनी राजधानी वापस चला गया। इस मौके का लाभ उठाकर बहादुरशाह ने पुर्तगालियों की मदद से गुजरात पर पुनः अधिकार कर लिया। हुमायूँ की विजय के विरुद्ध जनविद्रोह के चलते मुगलों के हाथ से गुजरात निकल गया।

हुमायँू और शेरशाह

हुमायूँ

1538ई0 में हुमायूँ ने शेरशाह से चुनार जीत लिया। तत्पश्चात् शेरशाह ने गौड़ (बंगाल) पर विजय प्राप्त की और बंगाल पर अधिकार कर लिया। शेरशाह के बढ़ते हुए प्रभाव से हुमायूँ सशंकित था। हुमायूँ मुंगेर के पास गंगा को पार करके शेरशाह की ओर बढ़ा । 1539ई0 में चौसा नामक स्थान पर हुमायूँ तथा शेरशाह के मध्य भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में परास्त हुमायूँ ने किसी तरह अपनी जान बचायी।

अपनी पराजय का बदला लेने के लिए हुमायूँ ने अपनी सेना के साथ कन्नौज नामक स्थान पर शेरशाह से मुकाबला किया। इस युद्ध मंे हुमायूँ की पराजय हुई। शेरशाह ने आगरा तथा दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया तथा वह, शेरशाह सूरी के नाम से भारत का शासक बना। हुमायूँ सिन्ध होते हुए फारस चला गया।

हुमायूँ की वापसी (1555 ई0)

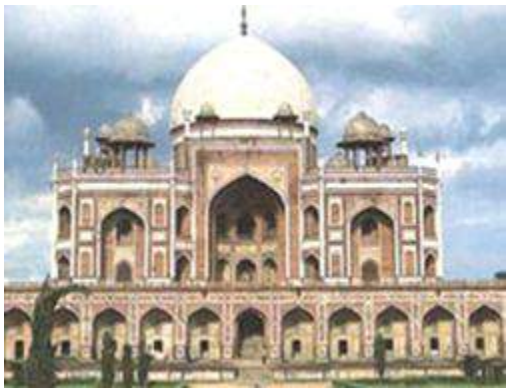

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली

शेरशाह द्वारा स्थापित साम्राज्य शेरशाह की मृत्यु के बाद दिन प्रति दिन कमजोर होता गया। हुमायूँ ने दिल्ली को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयास शुरू कर दिये। फारस के शासक की मदद से हुमायूँ ने कंधार, पंजाब, आगरा और दिल्ली पर कब्जा कर लिया। हुमायूँ ने दिल्ली में एक मदरसा तथा ग्वालियर में तराशे हुए पत्थरों का किला बनवाया। 1556 ई0 में जब वह शेर-ए-मंडल पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था, तभी लड़खड़ा कर गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी। भारत में मुग़ल वंश की नींव बाबर ने डाली थी जिसके आधार पर मुग़लों ने भारत में दो सौ वर्षों तक राज किया।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) बाबर के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

(ख) भारत के इतिहास में 1526 ई0 में हुए पानीपत के युद्ध का महत्त्व बताइए।

(ग) पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय के क्या कारण थे ?

(घ) खानवा युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

(ङ) हुमायूँ तथा शेरशाह के मध्य हुए युद्धों का वर्णन कीजिए।

(च) हुमायूँ ने पुनः अपने साम्राज्य को किस प्रकार प्राप्त किया ?

2. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने सही तथा गलत कथन के सामने गलत का निशान लगाइए-

क. बहादुरशाह हुमायूँ का मित्र था। ( )

ख. हुमायूँ की मृत्यु चैसा के मैदान में हुई। ( )

ग. चैसा के युद्ध में हुमायूँ की विजय हुई। ( )

3. स्तम्भ 'क' तथा स्तम्भ 'ख' में दिये हुए तथ्यों को सुमेलित कीजिए-

क	ख
हुमायूँ की मृत्यु	हुमायूँ तथा शेरशाह
चैसा का युद्ध	1539 ई0
गुजरात का शासक	1556 ई0
कन्नौज का युद्ध	बहादुरशाह

4. खाली स्थान भरिए-

(क) भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना ..... ने की थी।

(ख) बाबर और राणा साँगा के बीच ..... नामक स्थान पर युद्ध हुआ।

(ग) बाबर ने अपनी आत्मकथा ..... भाषा में लिखी।

5. पाठ के आधार पर निम्नलिखित तालिका पूर्ण कीजिए-

सन्	युद्ध	सन्	युद्ध
1526 ई0	.....	1527 ई0	.....
1528 ई0	.....	1529 ई0	.....

प्रॉजेक्ट वर्क -

पाठ के आधार पर बाबर के जीवन चरित्र एवं उपलब्धियों पर आधारित चार्ट बनाइए, और कक्षा में टाँगिए।